मुहावरे और लोकोक्तियाँ (Idioms &Proverbs)

मुहावरा - जो वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे उसे मुहावरा कहते हैं।

उदाहरण - आँख बिछाना - प्रतीक्षा करना

लोकोक्ति - लोकोक्ति का अर्थ है लोक में प्रचलित उक्ति। लोकोक्तियाँ लोक-अनुभव से बनती हैं। लोकोक्ति में समाज का चिर-संचित अनुभव वाक्यों के रुप में रहता है। ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं। इसे कहावत, जनश्रुति आदि भी कहते हैं।

उदाहरण- दूध का दूध पानी का पानी - सच और झूठ का ठीक फैसला

मुहावरे और लोकोक्ति में अंतर –

मुहावरा	लोकोक्ति
जो वाक्यांश अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे उसे मुहावरा कहते हैं।	लोकोक्ति का अर्थ है लोक में प्रचलित उक्ति। लोकोक्तियाँ लोक-अनुभव से बनती हैं।लोकोक्ति में समाज का चिर-संचित अनुभव वाक्यों के रुप में रहता है। ऐसे वाक्यों को ही लोकोक्ति कहते हैं।
मुहावरा वाक्यांश है।	लोकोक्ति संपूर्ण वाक्य है।
उदाहरण- आँख दिखाना- (गुस्से से देखना)	उदाहरण- आम के आम गुठलियों के दाम - (दुगुना लाभ)

वाक्य प्रयोग सहित कुछ मुहावरे -

- अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना - (स्वयं अपनी प्रशंसा करना) - अपने मुहँ मियाँ मिट्ठू बनने से क्या लाभ है ? कोई काम करके दिखाओ तो जानें।
- अक्ल का चरने जाना - (समझ का अभाव होना) - मेरी अक्ल घास चरने नहीं गई है जो तुम जैसे उधार न चुकाने वाले व्यक्ति से व्यापार करूँ ।
- अपने पैरों पर खड़ा होना - (स्वालंबी होना) - नवयुवकों को अपने पैरों पर खड़े होना चाहिए।
- अक्ल का दुश्मन - (मूर्ख) - शिव को समझाने से कोई लाभ नहीं ,वह तो अक्ल का दुश्मन है।
- अपना उल्लू सीधा करना -(मतलब निकालना) -आजकल के नेता अपना अपना उल्लू सीधा करने में विश्वास रखते हैं।
- आँखे खुलना - (सचेत होना) - ठोकर खाने के बाद ही रमेश की आँखें खुलीं।
- आँख का तारा - (बहुत प्यारा) - हर एक बच्चा अपनी माँ-बाप की आँखों का तारा होता है।
- आँखे दिखाना - (बहुत क्रोध करना) - मैंने सच क्या कह दिया, तुम तो मुझे ही आँखें दिखाने लगे।
- आसमान से बातें करना - (बहुत ऊँचा होना) - दुबई की बुर्ज-खलीफा इमारत आसमान से बातें करती है।
- ईंट का जबाब पत्थर से देना - (जबरदस्त बदला लेना) - भारत अपने दुश्मनों को ईंट का जबाब पत्थर से देगा।

- ईद का चाँद होना - (बहुत दिनों बाद दिखाई देना) - नयी जिम्मेदारियों के कारण आजकल सुरेश ईद का चाँद बन गया है।
- उड़ती चिड़िया पहचानना - (रहस्य की बात दूर से जान लेना) - हमारी अध्यापिका इतनी अनुभवी है कि उसे उड़ती चिड़िया पहचानने में देर नहीं लगती।
- उन्नीस बीस का अंतर होना - (बहुत कम अंतर होना) - दोनों बहनों की पहचान कर पाना बहुत कठिन है, क्योंकि दोनों में उन्नीस- बीस का ही अंतर है।
- कोल्हू का बैल (निरंतर काम में लगे रहना) - कोल्हू के बैल की तरह काम करके भी गरीब किसान भरपेट भोजन नहीं पा सकते।
- कुत्ते की मौत करना (बुरी तरह से मरना) - जो लोग गलत काम करते है वह सदा कुत्ते की मौत मरते हैं।
- कलेजे पर हाथ रखना (अपने दिल से पूछना) - अपने कलेजे पर हाथ रखकर कहो कि क्या तुम पढ़ाई करते हो।
- हाथ खींचना (साथ न देना) - मुसीबत के समय सब हाथ खींच लेते हैं।
- हाथ-पाँव मारना (प्रयास करना) - हाथ-पाँव मारते मारते ही व्यक्ति अंत में सफलता प्राप्त करता है।
- पानी फेर देना (निराश कर देना) - रोहन ने तो पिताजी की आशाओं पर पानी फेर दिया।
- हाथों के तोते उड़ना (दुख से हैरान होना) - चाचा जी के निधन का समाचार पाते ही उसके हाथों के तोते उड़ गए।
- कानोंकान खबर न होना (बिलकुल पता न चलना) - इस बात की किसी को कानोंकान खबर न हो।
- हवाई किले बनाना (झूठी कल्पनाएँ करना) - हवाई किले ही बनाते रहोगे या अब अभ्यास भी करोगे।
- छक्के छुड़ाना (बुरी तरह पराजित करना) - भारतीय सेना ने दुश्मनों के छक्के छुड़ा दिए।

अर्थसहित कुछ अन्य मुहावरे -

मुहावरा	अर्थ
अंग अंग- मुस्काना	बहुत प्रसन्न होना
अक्ल के पीछे लठ लिए फिरना	समझाने पर भी न मानना
आँख तरसना	देखने के लालायित होना
आँखों का काटा	अप्रिय व्यक्ति
गरदन झुकाना	लज्जित होना
आँख लगना	नींद आना
मुँह ताकना	दूसरे पर आश्रित होना
घास खोदना	फिज़ूल समय बिताना
कान पर जूँ तक न रेंगना	कुछ असर न होना
दौड़-धूप करना	कठोर श्रम करना
दाने-दाने को तरसना	अत्यंत गरीब होना
रफूचक्कर होना	भाग जाना
सिर पर मौत खेलना	मृत्यु समीप होना
मुँह उतरना	उदास होना
आड़े हाथों लेना	अच्छी तरह काबू करना
हाथ साफ करना	चुरा लेना
हवा लगना	असर पड़ना
गले मढ़ना	जबरदस्ती किसी को कोई काम सौंपना
मुँह में पानी भर आना	दिल ललचाना
पानी में आग लगाना	शांति भंग कर देना
मुँह बंद करना	चुप कर देना
कलई खुलना	रहस्य प्रकट हो जाना
टोपी उछालना	अपमानित करना
नौ-दो ग्यारह होना	भाग जाना

वाक्य प्रयोग सहित कुछ लोकोक्तियाँ -

- ऊँची दुकान फीका पकवान - (केवल ऊपरी दिखावा करना) - पास के अनेक स्टोर बड़े प्रसिद्ध है, पर सब घटिया दर्जे का माल बेचते हैं। इसे कहते है - ऊँची दुकान फीका पकवान।
- थोथा चना बाजे घना - (जिसमें गुण नहीं होता वह दिखावा करता है) - सीमा को पढ़ना लिखना क्या आ गया, सबको खुद बहुत पढ़ी है कहती फिरती है तभी तो गाँव के लोग कहते है - थोथा चना बाजे घना।
- न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी - (कारण के नष्ट होने पर कार्य न होना) - दहेज देने की मुसीबत से बचने के लिए सरला ने विवाह न करने का निश्चय किया। उसने सोचा न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।
- दूध का दूध पानी का पानी - (सच और झूठ का ठीक फैसला) - न्यायाधीश ने दूध का दूध पानी का पानी कर दिखाया।
- अंत भला सो भला - (जिसका परिणाम अच्छा है, वह सर्वोत्तम है) - राज पढ़ने में कमजोर था, लेकिन परीक्षा का समय आते-आते पूरी तैयारी कर ली और परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी को कहते हैं अंत भला सो भला।
- दूर के ढोल सुहावने - (जो चीजें दूर से अच्छी लगती हों) - उस शहर की बहुत प्रशंसा सुनते थे किन्तु जरा भी अच्छा नहीं था देखा तो पता चला-दूर के ढोल सुहावने।
- सावन हरे न भादों सूखे - (सदैव एक-सी स्थिति में रहना) - सरकार किसी की भी हो गरीबों के लिए तो सावन हरे न भादों सूखे।
- काठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती - (धोखा-धड़ी से एक बार ही काम निकलता है) - एक बार बचने का यह अर्थ नहीं कि तुम अपनी काठ की हाँडी बार-बार चढ़ा लोगे।
- ऊँट के मुँह में जीरा - (आवश्कता से काम वस्तु) - पहलवान भीखम से के सामने एक गिलास दूध का रखना मानो ऊँट के मुँह में जीरा रखने के समान हो।
- का वर्षा जब कृषि सुखाने - (समय बीत जाने पर सहायता करने से कोई लाभ नहीं होता) - मोहन को व्यापार में नुकसान होने पर तो किसी ने मदद नहीं की और जब पूरा दिवाला निकल गया तो लोग मदद के लिए आने लगे इसे कहते हैं, का वर्षा जब कृषि सुखाने।

अर्थसहित कुछ अन्य मुहावरे लोकोक्तियाँ -

जल में रहकर मगर से बैर	किसी के आश्रय में रहकर उससे शत्रुता मोल लेना
घर का भेदी लंका ढाए	आपसी फूट के कारण भेद खोलना
अधजल गगरी छलकत जाए	कम गुण वाला व्यक्ति दिखावा बहुत करता है
अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गई खेत	समय निकल जाने पर पछताने से क्या लाभ
नाच न जाने आँगन टेढ़ा	काम करना नहीं आना और बहाने बनाना
मन चंगा तो कठौती में गंगा	यदि मन पवित्र है तो घर ही तीर्थ है
दोनों हाथों में लड्डू	दोनों ओर से लाभ
नया नौ दिन पुराना सौ दिन	नई वस्तुओं का विश्वास नहीं होता, पुरानी वस्तु टिकाऊ होती है
बिन माँगे मोती मिले, माँगे मिले न भीख	माँगे बिना अच्छी वस्तु की प्राप्ति हो जाती है, माँगने पर साधारण भी नहीं मिलती
लातों के भूत बातों से नहीं मानते	शरारती समझाने से वश में नहीं आते
चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए	बहुत कंजूस होना
बगल में छुरी मुँह में राम	भीतर से शत्रुता और ऊपर से मीठी बातें